VOLUME- 1 ISSU -1V 16 May 2026

Dikshaurjit International Interdisciplinary Online Research Journal, Latur (DIIRJL)

Add.:Khadgaon Rd,Sambhaji Nagar,Near Smt.SushiladeviDeshmukh Senior College, LaturLatur, Maharashtra 413512, India.
Phone:9890408998, 8329647660Email ID: diirjournal@gmail.comWebsite:https://www.diirjournal.com

श्री. अमोल काळे
जि. प.प्रशाला बाभळगाव

कबीर के दोहों में सामाजिक चेतना

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में संत कबीरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। वे निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि थे। कबीर केवल भक्त कवि ही नहीं, बल्कि महान समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से समाज में फैली जाति-व्यवस्था, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास, पाखंड तथा ऊँच-नीच जैसी कुरीतियों का विरोध किया। उनके दोहों में मानवता, समानता, प्रेम और सामाजिक सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसलिए कबीर के साहित्य में सामाजिक चेतना

कबीर का जीवन परिचय

कबीरदास का जन्म १५वीं शताब्दी में माना जाता है। उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने किया। वे गुरु रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के आडंबरों का विरोध किया और मानव धर्म को सर्वोपरि माना।

सामाजिक चेतना का अर्थ

सामाजिक चेतना का अर्थ समाज के प्रति जागरूकता, उत्तरदायित्व और सुधार की भावना से है। जब साहित्य समाज की समस्याओं को उजागर करके लोगों को जागरूक करता है, तब वह सामाजिक चेतना का रूप धारण कर लेता है। कबीर के दोहे समाज को सही दिशा देने का कार्य करते हैं।

कबीर का जीवन परिचय

कबीरदास का जन्म १५वीं शताब्दी में माना जाता है। उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने किया। वे गुरु रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के आडंबरों का विरोध किया और मानव धर्म को सर्वोपरि माना।

कबीर के दोहों में सामाजिक चेतना

१. जाति-पांति का विरोध

कबीर ने जाति-व्यवस्था का विरोध करते हुए मनुष्य की पहचान उसके कर्म और ज्ञान से की।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान?

इस दोहे में कबीर बताते हैं कि किसी व्यक्ति की जाति नहीं, बल्कि उसका ज्ञान और गुण महत्वपूर्ण हैं। यह दोहा सामाजिक समानता का संदेश देता है।

२. धार्मिक पाखंड का विरोध

कबीर ने धार्मिक कर्मकांडों और बाहरी दिखावे का विरोध किया।

□माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका छोड़ दे, मन का मनका फेर?□

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि केवल माला फेरने से कुछ नहीं होता, जब तक मन शुद्ध न हो। वे आंतरिक शुद्धता को अधिक महत्व देते हैं।

३. मानवता और प्रेम का संदेश

कबीर के अनुसार प्रेम ही सच्चा धर्म है।

□पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय?

इस दोहे में कबीर बताते हैं कि केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। सच्चा ज्ञान प्रेम और मानवता में निहित है।

४. अंधविश्वास और रूढ़ियों का विरोध

कबीर ने समाज में फैले अंधविश्वासों पर प्रहार किया।

□कंकर पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय?□

यहाँ कबीर धार्मिक कट्टरता और दिखावे पर व्यंग्य करते हैं। वे ईश्वर को मन के भीतर खोजने का संदेश देते हैं।

५. समानता और भाईचारे की भावना

कबीर सभी मनुष्यों को समान मानते थे।

एक बूंद से सृष्टि रची है, कौन ब्रह्मण कौन शूद्र।

इस कथन में कबीर ने ऊँच-नीच और भेदभाव का विरोध करते हुए समानता का संदेश दिया है।

कबीर की भाषा और शैली

कबीर की भाषा सरल, सहज और जनसाधारण की भाषा थी। उन्होंने सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया, जिसमें हिंदी, ब्रज, अवधी, पंजाबी और फारसी शब्दों का मिश्रण मिलता है। उनकी शैली व्यंग्यात्मक, प्रभावशाली और प्रेरणादायक थी।

Dikshajit International Interdisciplinary Research Journal, Maharashtra
www.diirjournal.com

वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता

आज भी समाज में जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। ऐसे समय में कबीर के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनका संदेश मानवता, प्रेम, समानता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है। आधुनिक समाज को कबीर की शिक्षाओं से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

उपसंहार

कबीरदास के दोहे केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं हैं, बल्कि सामाजिक सुधार के सशक्त माध्यम भी हैं। उन्होंने समाज को नई दिशा दी और मानवता का संदेश फैलाया। उनके दोहों में सामाजिक चेतना का स्वर अत्यंत प्रभावशाली है। आज भी उनका साहित्य समाज को जागरूक करने और सही मार्ग दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।संदर्भ सूची

हिंदी साहित्य का इतिहास
कबीर ग्रंथावली
संत साहित्य और समाज
हिंदी संत काव्य
भारतीय साहित्य और संस्कृति

Dikshaurjit International Interdisciplinary Research Journal, Maharashtra Latur
www.diirjournal.com
diirjournal@gmail.com